ایاتها ۳۵ (۴۶) سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ (۶۶) رکوعاتها ۴

उस में ३५ आयतें हैं सूरह अहक़ाफ मक्का में नाज़िल हुई और ४ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حٰمٓ ۝۱ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝۲
हॉ मीम। इस किताब का उतारा जाना ज़बर्दस्त, हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ़ से है।

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَاۤ
हम ने आसमानों और ज़मीन और उन चीज़ों को जो उन दोनों के दरमियान में हैं पैदा नहीं किया

اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
मगर मस्लहत के खातिर और ऐक मुक़र्रर किए हुए वक़्त तक के लिए। और काफिर लोग

عَمَّاۤ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ۝۳ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ
जिस से उन को डराया जाता है ऐराज़ करते हैं। आप फ़रमा दीजिए भला बतलाओ वो जिन को तुम पुकारते हो

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ
अल्लाह को छोड़ कर मुझे दिखलाओ के उन्हों ने कौन सी ज़मीन पैदा की

اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ
या उन की शराकत है आसमानों में? मेरे सामने इस कुरआन से पेहले

مِّنْ قَبْلِ هٰذَاۤ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝۴
की कोई किताब लाओ या कोई मन्कूल इल्म ले आओ अगर तुम सच्चे हो।

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ
और उस से ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह को छोड़ कर पुकारे उस को

لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗۤ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ
जो क़यामत के दिन तक उसे जवाब नहीं दे सकता। और वो उन के

عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ۝۵ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ
पुकारने से भी बेखबर हैं। और जब लोगों का हश्र होगा तो ये उन के दुशमन

اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝۶ وَاِذَا تُتْلٰى
बन जाएंगे और उन की इबादत का भी इन्कार करेंगे। और जब उन पर

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ

हमारी साफ साफ आयतें तिलावत की जाती हैं तो काफ़िर लोग हक़ के मुतअल्लिक़ जब हक़ उन के

لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ

पास आया केहते हैं के ये तो खुला जादू है। क्या ये केहते हैं के

افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ

इस नबी ने उस को घड़ लिया है? आप फरमा दीजिए के अगर मैं ने उस को घड़ लिया है तो तुम अल्लाह के मुक़ाबले में मेरे

مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ

कुछ भी काम नहीं आ सकोगे। अल्लाह खूब जानता है जिस में तुम लगे रेहते हो। अल्लाह की शहादत

شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٨﴾

मेरे और तुम्हारे दरमियान काफ़ी है। और वो बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَاۤ اَدْرِيْ

आप फ़रमा दीजिए के मैं रसूलों में से कोई नया नहीं आया, और मुझे क्या ख़बर के

مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ؕ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى

मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा? मैं तो सिर्फ उसी का इत्तिबा करता हूँ जो मेरी तरफ

اِلَيَّ وَمَاۤ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

वही किया जा रहा है और मैं सिर्फ साफ साफ डराने वाला हूँ। आप फ़रमा दीजिए बतलाओ

اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ

अगर ये कुरआन अल्लाह की तरफ़ से हो और तुम ने उस के साथ कुफ्र किया और बनी इस्राईल में

مِّنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ

से एक गवाह ने गवाही दी उसी जैसी किताब की, फिर वो ईमान ले आया,

وَاسْتَكْبَرْتُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠﴾ ع

और तुम तकब्बुर करते रहे। यक़ीनन अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देते।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا

और काफिरों ने ईमान वालों के मुतअल्लिक़ कहा के अगर ये दीन बेहतर होता

مَّا سَبَقُوْنَاۤ اِلَيْهِ ؕ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ

तो ये उस की तरफ हम से सबक़त न करते। और जब उन्हों ने उस के ज़रिए हिदायत न पाई तो अब ये कहेंगे

هٰذَآ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ﴿١١﴾ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى

के ये तो पुराना झूठ है। हालांके उस से पेहले मूसा (अलैहिस्सलाम) की किताब

اِمَامًا وَّ رَحْمَةً ؕ وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا

रहनुमा और रहमत थी। और ये किताब है जो तसदीक़ करने वाली है, अरबी

عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ وَ بُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢﴾

ज़बान वाली है ताके वो ज़ालिमों को डराए और एहसान करने वालों के लिए बशारत हो।

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ

बेशक जिन लोगों ने कहा के हमारा रब अल्लाह है, फिर वो जमे रहे तो उन पर न खौफ़

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١٣﴾ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ

होगा और न वो ग़मगीन होंगे। ये जन्नती हैं,

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾

उस में वो हमेशा रहेंगे। उन आमाल के बदले के तौर पर जो वो करते थे।

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ؕ حَمَلَتْهُ

और हम ने इन्सान को हुक्म दिया उस के वालिदैन के साथ भलाई करने का। उस की माँ ने उस को पेट में

اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ

उठाया तकलीफ से और उस को जना तकलीफ से। और उस का पेट में रेहना और उस का दूध छुड़ाना

ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَ بَلَغَ اَرْبَعِيْنَ

तीस महीनों में होता है। यहाँ तक के जब वो अपनी जवानी को पहोंच जाता है और चालीस साल की उम्र

سَنَةً ۙ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ

को पहोंचता है, तो केहता है के ऐ मेरे रब! तू मुझे इस की तौफ़ीक़ दे के मैं तेरी नेअमत का शुक्र अदा करूँ

الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا

जो तू ने मुझ पर और मेरे वालिदैन पर की और इस की के मैं नेक अमल करूँ

تَرْضٰىهُ وَ اَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ اِنِّيْ تُبْتُ

जो तू पसन्द करे, और तू मेरे लिए मेरी औलाद में सलाह (व तक़वा) रख दे। यक़ीनन मैं तेरी तरफ तौबा

اِلَيْكَ وَاِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

करता हूँ और मैं मुसलमानों में से हूँ। यही लोग हैं के जिन से

نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ हम उन के नेक अमल क़बूल करते हैं और हम उन की ख़ताओं से दरगुज़र
عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيْٓ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ؕ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ करते हैं, वो जन्नतियों में होंगे। उस सच्चे वादे की बिना पर जो
كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝١٦ وَالَّذِيْ قَالَ لِوَالِدَيْهِ اُفٍّ لَّكُمَآ उन से वादा किया जाता था। और जिस ने अपने वालिदैन से कहा के उफ है तुम पर,
اَتَعِدٰنِنِيْٓ اَنْ اُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُوْنُ مِنْ قَبْلِيْ ۚ क्या तुम मुझे डराते हो इस से के मैं क़ब्र से निकाला जाऊँगा हालांके मुझ से पेहले उम्मतें गुज़र चुकी हैं?
وَهُمَا يَسْتَغِيْثٰنِ اللّٰهَ وَيْلَكَ اٰمِنْ ۗ اِنَّ وَعْدَ और वो दोनों अल्लाह से फरयाद कर रहे हैं के तेरा नास हो! तू ईमान ले आ। यक़ीनन अल्लाह का
اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٧ वादा सच्चा है, फिर भी वो केहता है के ये तो महज़ पेहले लोगों के अफसाने हैं।
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ यही लोग हैं जिन पर अज़ाब का क़ौल साबित हो चुका बशुमूल उन उम्मतों के जो जिन्नात
مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا और इन्सानों की उन से पेहले गुज़र चुकी हैं, के यक़ीनन ये खसारे
خٰسِرِيْنَ ۝١٨ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمْ वाले हैं। और सब के दरजात उन के आमाल के मुताबिक़ हैं। और ताके अल्लाह
اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝١٩ وَيَوْمَ يُعْرَضُ उन को उन के आमाल का बदला पूरा पूरा दे और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। और जिस दिन काफिरों
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ को आग पर पेश किया जाएगा, (कहा जाएगा) के तुम ने अपने मज़े उड़ा लिए
فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ अपनी दुन्यवी ज़िन्दगी में और तुम ने उस से फ़ाइदा उठा लिया। तो आज तुम्हें सज़ा दी जाएगी
عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِي ज़िल्लत के अज़ाब की इस वजह से के तुम ज़मीन में

ع الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَاذْكُرْ

नाहक़ तकब्बुर करते थे और इस वजह से के तुम नाफरमान थे। और तुम याद करो

اَخَا عَادٍ ؕ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ

क़ौमे आद के भाई को। जब के उन्हों ने अपनी क़ौम को डराया अहक़ाफ में और उन से पेहले

النُّذُرُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖۤ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا

और उन के बाद भी डराने वाले गुज़र चुके हैं के इबादत मत करो

اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۲۱﴾

मगर अल्लाह ही की। यक़ीनन मुझे तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है।

قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ

तो उन्हों ने कहा क्या हमारे पास तुम इस लिए आए हो ताके हमें हमारे माबूदों से हटा दो? तो ले आओ वो अज़ाब जिस से

اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۲۲﴾ قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ

तुम हमें डरा रहे हो अगर तुम सच्चों में से हो। नबी ने कहा के इल्म तो सिर्फ अल्लाह ही के

اللّٰهِ ۖ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّاۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّیْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا

पास है। और मैं तुम्हें वही पहोंचाता हूँ जिसे दे कर मैं भेजा गया हूँ, लेकिन मैं तुम्हें ऐसी क़ौम देख रहा हूँ

تَجْهَلُوْنَ ﴿۲۳﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ

जो जहालत करती हो। फिर जब उन्हों ने वो अज़ाब देखा के बादल है जो उन की वादियों की तरफ़ आ रहा है

قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ؕ

तो बोले ये बादल है जो हम पर बारिश बरसाएगा।(कहा गया) बल्के ये वो अज़ाब है जिस को तुम जल्दी तलब कर रहे थे।

رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۴﴾ ۙ تُدَمِّرُ كُلَّ شَیْءٍۭ بِاَمْرِ

ये एक तूफानी हवा है जिस में दर्दनाक अज़ाब है। जो हर चीज़ को अपने रब के हुक्म से मलयामेट

رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰۤى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی

कर देगी, अब वो ऐसे हो गए के उन के रेहने के मकानात के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं देता। इसी तरह हम

الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۲۵﴾ وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَاۤ

मुजरिम लोगों को सज़ा देते हैं। और हम ने उन को वो कुदरत दी थी जो हम

اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّ

ने तुम्हें नहीं दी, और हम ने उन के लिए कान और आँखें और दिल

اَفْـِٕدَةً ۚۖ فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَاۤ اَبْصَارُهُمْ
बनाए थे। फिर उन के कान और उन की आँखें और उन के दिल

وَلَاۤ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَیْءٍ اِذْ كَانُوْا یَجْحَدُوْنَ ۙ بِاٰیٰتِ
कुछ भी काम न आए, इस लिए के वो अल्लाह की आयात का इन्कार

اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ۟ؒ۲۶ وَلَقَدْ ع ٣ ٢ ٣
करते थे, और उन को घेर लिया उस अज़ाब ने जिस का वो मज़ाक़ उड़ाया करते थे। यक़ीनन

اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا الْاٰیٰتِ
हम ने हलाक किया उन बस्तियों को जो तुम्हारे इर्द गिर्द हैं और हम ने निशानियों को फेर फेर कर बयान किया

لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ۟۲۷ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا
ताके वो रूजूअ करें। तो जिन को उन लोगों ने अल्लाह के सिवा तक़र्रुब के लिए

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ
माबूद बना रखा था, उन्हों ने उन की मदद क्यूं नहीं की? बल्के वो उन से खो गए।

وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ۟۲۸
और ये उन का झूठ था और उन की घड़ी हुई बातें थीं।

وَاِذْ صَرَفْنَاۤ اِلَیْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ یَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ
और जब के हम ने आप की तरफ कई एक जिन्नात को मुतवज्जेह किया के कुरआन सुनें।

فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْۤا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِیَ وَلَّوْا
फिर जब वो लोग कुरआन के पास आ पहोंचे तो केहने लगे के चुप रहो। फिर जब क़िराअत ख़त्म हो गई तो वो अपनी

اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِیْنَ ۟۲۹ قَالُوْا یٰقَوْمَنَاۤ اِنَّا سَمِعْنَا
क़ौम की तरफ़ डराने के लिए वापस आए। केहने लगे ऐ हमारी क़ौम! हम ने एक किताब

كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ
सुनी है जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के बाद उतारी गई है, जो सच्चा बतलाने वाली है उन किताबों को

یَدَیْهِ یَهْدِیْۤ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِیْقٍ مُّسْتَقِیْمٍ ۟۳۰
जो इस से पेहले थीं जो हक़ की तरफ और सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई करती है।

یٰقَوْمَنَاۤ اَجِیْبُوْا دَاعِیَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ یَغْفِرْ لَكُمْ
ऐ हमारी क़ौम! तुम अल्लाह के दाई का केहना मान लो और उस पर ईमान ले आओ, अल्लाह तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह

مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾

बख़्शश देगा और तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचा लेगा।

وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ

जो अल्लाह के दाई की बात नहीं मानेगा, तो वो ज़मीन में (भाग कर) अल्लाह को थका नहीं सकेगा

وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ

और उस के लिए अल्लाह के सिवा कोई हिमायती भी नहीं होंगे। यही लोग खुली गुमराही

مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

में हैं। क्या उन्हों ने देखा नहीं के अल्लाह जिस ने आसमान और ज़मीन पैदा

وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى

किए और वो उन के पैदा करने की वजह से थका नहीं, वो इस पर क़ादिर है के मुर्दों

اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾

को ज़िन्दा करे। क्यूं नहीं! यक़ीनन वो हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ

और जिस दिन काफिरों को आग पर पेश किया जाएगा। (कहा जाएगा) क्या

هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا

ये सच नहीं है? तो वो बोलेंगे क्यूं नहीं! हमारे रब की क़सम! अल्लाह फ़रमाएँगे के फिर तुम अज़ाब

الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾ فَاصْبِرْ

चखो इस वजह से के तुम कुफ्र करते थे। फिर आप सब्र कीजिए जैसा के

كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ

पैग़म्बरों में से ऊलुल अज़्म पैग़म्बरों ने सब्र किया और उन के लिए आप जल्दी

لَّهُمْ ؕ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ

न कीजिए। जिस दिन वो देखेंगे वो अज़ाब जिस से उन्हें डराया जा रहा है (तो वो समझेंगे)

لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ بَلٰغٌ ۚ

के वो ठेहरे नहीं मगर दिन की एक घड़ी। ये (कुरआन) पहोंचा देना है।

فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

अब सिर्फ़ नाफ़रमान ही हलाक होंगे।

سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ مَّدَنِيَّةٌ (٩٥) (٤٧)

اٰيَاتُهَا ٣٨ — उस में ३८ आयतें हैं

رُكُوْعَاتُهَا ٤ — और ४ रूकूअ हैं

سूरह मुहम्मद मदीना में नाज़िल हुई

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ

जिन लोगों ने कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका अल्लाह ने उन के

اَعْمَالَهُمْ ۝١ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا

अमल कल्अदम कर दिए। और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे और ईमान लाए

بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ

उस पर जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उन के रब की तरफ से उतारा गया है और वो हक़ है, तो अल्लाह ने

سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝٢ ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا

उन से उन की बुराइयाँ दूर कर दीं, और उन के हाल की इस्लाह कर दी। ये इस वजह से के जिन्हों ने कुफ्र किया

اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ

वो बातिल के पीछे चले हैं और ये के जो ईमान लाए हैं उन्हों ने उस हक़ की पैरवी की है जो उन के

مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝٣

रब की तरफ से है। इसी तरह अल्लाह इन्सानों के लिए उन की मिसालें बयान करते हैं।

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ؕ حَتّٰٓى

फिर जब तुम काफिरों से मिलो तो उन की गर्दनें मारो। यहाँ तक के

اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّا ۢ بَعْدُ

जब तुम उन का खून बहा चुको, तो मज़बूत बांध लो। फिर या तो (क़ैदियों को) उस के बाद एहसान कर के (छोड़ देना है),

وَ اِمَّا فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ۚ ذٰلِكَ ؕ

या फिदया ले कर (छोड़ना है), जब तक के लड़ने वाले अपने हथ्यार न रख दें। ये तो हुवा।

وَلَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا بَعْضَكُمْ

और अगर अल्लाह चाहता तो उन से इन्तिक़ाम लेता, लेकिन इस लिए ताके तुम में से एक को दूसरे के

بِبَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ

ज़रिए अल्लाह आज़माए। और वो जो क़त्ल किए गए अल्लाह के रास्ते में उन के

يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٤ سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝٥

आमाल अल्लाह हरगिज़ कल्अदम नहीं करेगा। जल्द ही उन की रहनुमाई करेगा और उन के हाल की इस्लाह करेगा।

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝٦ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

और उन को जन्नत में दाखिल करेगा जिस का उन के सामने अल्लाह ने तआरुफ़ करा दिया है। ऐ ईमान

اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝٧

वालो! अगर तुम अल्लाह की नुसरत करोगे तो वो तुम्हारी नुसरत करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٨

और जो काफ़िर हैं तो उन के लिए बरबादी है और अल्लाह ने उन के अमल हब्त कर दिए हैं।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝٩

ये इस वजह से के उन्हों ने नापसन्द किया जो अल्लाह ने उतारा, फिर अल्लाह ने उन के आमाल कल्अदम कर दिए।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

क्या फिर वो ज़मीन में चले फिरे नहीं के देखते के उन लोगों का अन्जाम कैसा हुवा

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۫ وَلِلْكٰفِرِيْنَ

जो उन से पेहले थे? जिन को अल्लाह ने मलयामेट कर दिया और काफिरों के लिए उन की

اَمْثَالُهَا ۝١٠ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

मिसालें हैं। ये इस वजह से के अल्लाह ईमान वालों का कारसाज़ है

ع ٢ وَ اَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ۝١١ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ

और जो काफिर हैं उन का कोई कारसाज़ नहीं। यक़ीनन अल्लाह उन लोगों को जो ईमान

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا

लाए और नेक अमल करते रहे उन को ऐसी जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे से नेहरें बेहती

الْاَنْهٰرُ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ

होंगी। और जो काफिर हैं वो मज़े कर रहे हैं और खाते हैं जैसा के

كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۝١٢ وَكَاَيِّنْ

चौपाए खाते हैं, हालांके आग उन का ठिकाना है। और कितनी बस्तियाँ

مِّنْ قَرْيَةٍ هِىَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِىْٓ اَخْرَجَتْكَ ۚ

थीं जो तुम्हारी इस बस्ती से जिस ने आप को निकाला उस से ज़्यादा क़ूव्वत वाली थीं?

اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿١٣﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ

उन को हम ने हलाक किया, फिर उन का कोई मददगार भी नहीं हुवा। क्या वो शख़्स जो अपने रब की तरफ़ से रोशन रास्ते

مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿١٤﴾

पर है उस शख़्स की तरह हो सकता है जिस के लिए उस की बदअमली मुज़य्यन की गई और जो अपनी ख्वाहिशात के

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ فِيْهَآ اَنْهٰرٌ

पीछे चलते हैं। उस जन्नत का हाल जिस का मुत्तक़ियों से वादा किया गया है, ये है के उस में नेहरें हैं

مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ

पानी की जो बदबूदार नहीं। और नेहरें हैं दूध की जिस का मज़ा बदला नहीं।

وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَاَنْهٰرٌ

और नेहरें हैं शराब की जो पीने वालों के लिए लज़ीज़ है। और नेहरें हैं

مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ؕ وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ

सुथरे शहद की। और उन के लिए उन में हर क़िस्म के मेवे हैं

وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ

और उन के रब की तरफ से मग़फिरत है। क्या ये शख़्स उस शख़्स की तरह हो सकता है जो आग में हमेशा रहेगा

وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ﴿١٥﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ

और जिन्हें गर्म पानी पिलाया जाएगा, फिर वो पानी उन की अंतड़ियाँ काट देगा? और उन में से कुछ वो हैं

يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا

जो आप की तरफ कान लगाते हैं। यहाँ तक के जब वो आप के पास से निकलते हैं तो उन

لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

से केहते हैं जिन को इल्म दिया गया के पैग़म्बर ने अभी क्या कहा? ये वो हैं के जिन

طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿١٦﴾

के दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और ये लोग अपनी ख़्वाहिशात के पीछे चले हैं।

وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿١٧﴾

और जो हिदायत पर हैं अल्लाह ने उन को मज़ीद हिदायत दी है और उन को उन का तक़्वा अता किया है।

فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ

वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर क़यामत के के उन के पास अचानक आ जाए।

فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ

तो उस की अलामतें तो आ ही चुकी हैं। फिर उन के लिए अपनी नसीहत हासिल करने का वक़्त कहाँ रहेगा जब

ذِكْرٰىهُمْ ﴿١٨﴾ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ

क़यामत उन के पास आ पहोंचेगी? तो आप यक़ीन रखिए के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप अपने और

لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के गुनाह के लिए इस्तिग़फ़ार कीजिए। और अल्लाह तुम्हारे

مُتَقَلَّبَكُمْ وَ مَثْوٰىكُمْ ﴿١٩﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ع ٢

चलने फिरने और रेहने सेहने की खबर रखता है। और ईमान वाले केहते हैं के

لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ

कोई सूरत क्यूं नहीं उतारी जाती? फिर जब कोई मुहकम सूरत उतारी जाती है

وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ

और उस में क़िताल का ज़िक्र होता है, तो आप देखोगे उन लोगों को जिन के दिलों में

مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ

बीमारी है के वो आप की तरफ़ देखते हैं उस शख़्स के देखने की तरह के जिस पर मौत की ग़शी

مِنَ الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢٠﴾ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ؕ

तारी हो। तो उन के लिए हलाकत है। उन की ताअत और बात चीत मालूम है।

فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۫ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا

फिर जब मुआमला पुख्ता हो जाए, फिर अगर ये अल्लाह के साथ सच्चे रहें तो ये उन के लिए

لَّهُمْ ﴿٢١﴾ فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا

बेहतर है। तुम से तवक्कुअ ये है के अगर तुम हाकिम बन जाओ तो मुल्क में

فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْۤا اَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

फसाद बरपा करो और क़तारहमी करो। यही लोग हैं

لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰۤى اَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾

जिन पर अल्लाह ने लानत फ़रमाई है, फिर उन को बेहरा कर दिया है और उन की आँखों को अन्धा कर दिया है।

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾ اِنَّ

क्या फिर वो क़ुरआन में तदब्बुर नहीं करते या उन के दिलों पर ताले पड़े हुए हैं? यक़ीनन

الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ

जो लोग पुश्त फेर कर हट गए इस के बाद के उन के सामने हिदायत

لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ وَاَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٥﴾

वाज़ेह हो चुकी थी, शैतान ने ये काम उन के लिए मुज़य्यन किया और उन को मुहलत दिखाई।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ

ये इस वजह से के उन्हों ने कहा उन लोगों से जो नापसन्द करते हैं उस कुरआन को जो अल्लाह ने उतारा है

سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾

के मुस्तक़बिल में हम बाज़ उमूर में तुम्हारी बात मानेंगे। हालांके अल्लाह जानता है उन के चुपके से कही हुई बात को।

فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ

फिर क्या हाल होगा जब के फरिश्ते उन की जान निकाल रहे होंगे, मार रहे होंगे उन के चेहरों पर

وَاَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ

और उन की पीठों पर? ये अज़ाब इस वजह से के उन्हों ने अल्लाह को नाराज़ करने वाली चीज़ों को अपनाया

وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ اَمْ حَسِبَ ع ٣

और उस की खुशनूदी को नापसन्द किया, फिर अल्लाह ने उन के आमाल हब्त कर दिए। क्या वो लोग

الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ

जिन के दिलों में मर्ज़ है उन्हों ने ये समझ रखा है के अल्लाह उन का कीना हरगिज़ नहीं निकालेगा (यानी ज़ाहिर नहीं

اَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ

करेगा)? और अगर हम चाहें तो आप को हम वो मुनाफिक़ीन दिखा दें, फिर आप उन को पेहचान लें

بِسِيْمٰهُمْ ۭ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ۭ وَاللّٰهُ

उन की अलामत से। और आप उन को बात के लेहजे में ज़रूर पेहचान लोगे। और अल्लाह को

يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ

तुम्हारे आमाल का इल्म है। और हम तुम्हें ज़रूर आज़माएंगे ताके हम तुम में से जिहाद करने

مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا۟ اَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾

वालों और सब्र करने वालों को मालूम कर लें, और ताके तुम्हारे अन्दरूनी हाल को आज़माएं।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا

यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका और रसूल

الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ

की मुखालफ़त की इस के बाद के उन के लिए हक़ वाज़ेह हो गया

لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ۝٣٢ يٰۤاَيُّهَا

वो अल्लाह को ज़रा भी ज़रर हरगिज़ नहीं पहोंचा सकेंगे। और अनक़रीब अल्लाह उन के आमाल हब्त कर देगा। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ

ईमान वालो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो

وَلَا تُبْطِلُوْۤا اَعْمَالَكُمْ ۝٣٣ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا

और अपने अमल बातिल मत करो। यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया और अल्लाह

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ

के रास्ते से रोका, फिर वो मर गए इस हाल में के वो काफिर थे तो अल्लाह उन की हरगिज़

اللّٰهُ لَهُمْ ۝٣٤ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْۤا اِلَى السَّلْمِ ۖۚ وَاَنْتُمُ

मग़फिरत नहीं करेगा। फिर तुम कमज़ोर मत बनो और तुम सुल्ह की तरफ मत बुलाओ। और तुम ही

الْاَعْلَوْنَ ۖۚ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ۝٣٥

ग़ालिब रहोगे। और अल्लाह तुम्हारे साथ है और तुम्हारे अमल कम भी नहीं करेगा।

اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا

दुन्यवी ज़िन्दगी तो महज़ खेल और तमाशा है। और अगर तुम ईमान लाओगे

وَ تَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ۝٣٦

और मुत्तक़ी बनोगे तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारा अज्र देगा और तुम से तुम्हारे माल नहीं मांगेगा।

اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ

अगर वो तुम से माल का सवाल करे, फिर वो तुम से इसरार से सवाल करे, तो तुम बुख्ल करने लगो और वो तुम्हारे

اَضْغَانَكُمْ ۝٣٧ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا

कीने खोल कर रहे। सुनो! तुम वो लोग हो के तुम्हें बुलाया जाता है ताके अल्लाह के रास्ते में

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا

तुम खर्च करो। फिर तुम में से बाज़ बुख्ल करते हैं। और जो भी बुख्ल करेगा तो सिर्फ

يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ

अपने आप से बुख्ल करेगा। और अल्लाह बेनियाज़ है और तुम मुहताज हो।

وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ

और अगर तुम ऐराज़ करोगे तो अल्लाह तुम्हारे अलावा क़ौम को बदले में ले आएगा, फिर

لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾

वो तुम जैसे नहीं होंगे।

اٰيَاتُهَا ٢٩ (٤٨) سُوْرَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ (١١١) رُكُوْعَاتُهَا ٤

उस में २६ आयतें हैं सूरह फत्ह मदीना में नाज़िल हुई और ४ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ﴿١﴾ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ

यक़ीनन हम ने आप को फत्हे मुबीन के साथ कामयाबी अता की। ताके अल्लाह आप के लिए

مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ

आप के अगले और पिछले गुनाह बख्श दे, और अल्लाह अपनी नेअमत आप पर इतमाम तक पहोंचाए,

وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢﴾ وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ

और आप को सीधे रास्ते की रहनुमाई करे। और आप की अल्लाह ज़बर्दस्त

نَصْرًا عَزِيْزًا ﴿٣﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ

नुसरत करे। वही है जिस ने सकीना उतारा ईमान

فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ؕ

वालों के दिलों में ताके वो अपने मौजूदा ईमान के साथ ईमान में और बढ़ जाएं।

وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا

और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन के लशकर हैं। और अल्लाह इल्म वाला,

حَكِيْمًا ﴿٤﴾ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ

हिक्मत वाला है। ताके अल्लाह ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को जन्नतों में दाखिल करे

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ

जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे और अल्लाह उन

عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا

से उन की बुराइयाँ दूर कर दे। और ये अल्लाह के नज़दीक बहोत बड़ी

عَظِيْمًا ۝٥ وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ

कामयाबी है। और ताके अल्लाह मुनाफिक़ मर्दों और मुनाफिक़ औरतों

وَ الْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ

और मुशरिक मर्दों और मुशिरक औरतों को अज़ाब दे जो अल्लाह के साथ बुरा गुमान

ظَنَّ السَّوْءِ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَ غَضِبَ اللّٰهُ

करने वाले हैं। उन पर मसाइब का चक्कर घूमता रहा। और अल्लाह उन पर गज़बनाक

عَلَيْهِمْ وَ لَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَ سَآءَتْ

है और उस ने उन पर लानत फ़रमाई है और उन के लिए जहन्नम तय्यार की है। और वो बुरी

مَصِيْرًا ۝٦ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

जगह है। और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन के लशकर हैं।

وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝٧ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ

और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। यक़ीनन हम ने आप को

شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝٨ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ

शहादत देने वाला, बशारत देने वाला, डराने वाला बना कर भेजा है। ताके तुम ईमान लाओ अल्लाह पर

وَ رَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً

और उस के रसूल पर और तुम उन की नुसरत करो और उन की ताज़ीम करो। और तुम अल्लाह की सुबह व शाम

وَّاَصِيْلًا ۝٩ اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ

तस्बीह करो। जो लोग आप से बैअत करते हैं वो अल्लाह ही से बैअत कर रहे

اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ

हैं। अल्लाह का हाथ उन के हाथों के ऊपर है। फिर जो बैअत तोड़ेगा

فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ

तो खुद अपने नुक़सान के लिए तोड़ेगा। और जो पूरा करेगा उस को जिस पर

عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝١٠ ع سَيَقُوْلُ

उस ने अल्लाह से मुआहदा किया, तो अनक़रीब अल्लाह उन्हें भारी अज्र देगा। अनक़रीब कहेंगे

لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَاۤ اَمْوَالُنَا

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से वो लोग जो अअराब में से पीछे रेहने वाले हैं के हमारे माल और हमारे

وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ

घर वालों ने हमें मशग़ूल कर दिया, इस लिए आप हमारे लिए इस्तिग़फार कीजिए। अनक़रीब वो अपनी ज़बान से कहेंगे

مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ

वो जो उन के दिलों में नहीं है। आप फरमा दीजिए फिर कौन मालिक है तुम्हारे लिए

مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ

अल्लाह के मुक़ाबले में किसी चीज़ का अगर वो तुम्हें ज़रर पहोंचाने या तुम्हें नफा पहोंचाने का

بِكُمْ نَفْعًا ۭ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝١١

इरादा करे? बल्के अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है।

بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ

बल्के तुम ने गुमान किया के रसूल और ईमान वाले अपने घर वालों के पास कभी भी

اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ

वापस पलट कर नहीं आएंगे, और उस को तुम्हारे दिलों में मुज़य्यन किया गया

وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ وَكُنْتُمْ قَوْمًۢا بُوْرًا ۝١٢

और तुम ने बुरा गुमान किया। और तुम हलाक होने वाली क़ौम थी।

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا

और जो ईमान नहीं लाएगा अल्लाह और उस के रसूल पर, तो हम ने काफिरों के लिए

لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ۝١٣ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ

दहकती आग तय्यार कर रखी है। और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है।

يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ

अल्लाह जिस की चाहे मग़फिरत कर दे और अज़ाब दे जिसे चाहे। और अल्लाह बहोत ज़्यादा

غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝١٤ سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ

बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। अनक़रीब पीछे रेहने वाले कहेंगे जब ग़नीमतें

اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ

लेने के लिए तुम चलोगे के हमें छोड़ दो के तुम्हारे पीछे पीछे हम भी आएं।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ۭ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا

वो चाहते हैं के अल्लाह का कलाम बदल दें। आप फरमा दीजिए के तुम हमारे पीछे पीछे हरगिज़ नहीं आ सकते,

كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ

इसी तरह अल्लाह ने इस से पेहले फरमा दिया है। तब वो कहेंगे

بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ۭ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝۱۵

बल्के तुम हम से हसद करते हो। बल्के वो नहीं समझते मगर थोड़ा सा।

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ

आप फरमा दीजिए अअराब में से पीछे रेहने वालों से के अनक़रीब तुम्हें बुलाया जाएगा

اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ

सख्त जंग करने वाली क़ौम की तरफ, उन से तुम क़िताल करोगे या वो सुलह कर लेंगे।

فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ

फिर अगर तुम इताअत करोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अज्र देगा।

وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا

और अगर तुम रूगरदानी करोगे जैसा के तुम ने इस से पेहले रूगरदानी की है, तो अल्लाह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब

اَلِيْمًا ۝۱۶ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ

देगा। अन्धे पर कोई हरज नहीं और लंगड़े पर कोई हरज

حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ

नहीं और बीमार पर कोई हरज नहीं। और जो अल्लाह और उस के रसूल की

وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

इताअत करेगा तो वो उसे ऐसी जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे से नेहरें बेहती

ع ٢ الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝۱۷

होंगी। और जो ऐराज़ करेगा तो उसे अल्लाह दर्दनाक अज़ाब देंगे।

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ

यक़ीनन अल्लाह राज़ी हुवा ईमान वालों से जब वो बैअत कर रहे थे आप से

تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ

दरख्त के नीचे, फिर अल्लाह ने मालूम कर लिया जो उन के दिलों में है, फिर अल्लाह ने

السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝۱۸ وَّمَغَانِمَ

उन पर सकीना उतारा और उन को क़रीबी फ़त्ह बदले में दी। और बदले में

كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٩﴾

दी बहोत सी ग़नीमतें जो वो लेंगे। और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ

अल्लाह ने तुम से बहोत सी ग़नीमतों का वादा किया है जिन को तुम लोगे, फिर उस ने

لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ

तुम्हें ये जल्दी दे दी, और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए। और ताके ये

اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَ يَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢٠﴾

ईमान वालों के लिए निशानी बने और अल्लाह तुम्हें सीधे रास्ते की रहनुमाई करे।

وَّ اُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ

और एक दूसरी ग़नीमत जिस पर तुम क़ादिर नहीं हुए जिस का अल्लाह ने इहाता किया है।

وَ كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢١﴾ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ

और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। और अगर तुम से क़िताल करते

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا

ये काफिर तो वो पुश्त फेर कर भागते, फिर वो कोई मददगार और

وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٢٢﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ

हिमायती न पाते। ये अल्लाह की सुन्नत है जो इस से पेहले गुज़र

مِنْ قَبْلُ ۖۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾ وَهُوَ

चुकी है। और अल्लाह की सुन्नत में आप कोई तबदीली हरगिज़ नहीं पाओगे। और वही

الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ

अल्लाह है जिस ने उन के हाथ तुम से और तुम्हारे हाथ उन से रोक दिए

بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ؕ

मक्का की वादी में इस के बाद के उस ने तुम्हें उन पर फ़त्ह दी।

وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿٢٤﴾ هُمُ الَّذِيْنَ

और अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं। ये वही हैं जो

كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ

काफिर हैं और जिन्हों ने तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका और क़ुरबानी के

مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ

जानवर को जो रुका हुवा रेह गया उस मौक़े में पहोंचने से रोका। और अगर ईमान वाले मर्द

وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ

और ईमान वाली औरतें न होतीं जिन को तुम नहीं जानते के तुम उन को रौंद डालोगे

فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ

तो तुम को उन से बेखबरी में नुक़सान पहोंच जाता। ताके अल्लाह अपनी रहमत में

اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا

दाखिल करे जिसे चाहे। अगर ये मुसलमान कुफ्फार से अलग हो गए होते, तो हम उन में से

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِذْ جَعَلَ

काफिरों को दर्दनाक अज़ाब देते। जब के काफिरों ने

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ

अपने दिल में ज़िद की ठान ली, वो भी जाहिलीयत

الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ

की ज़िद, तो अल्लाह ने अपना सकीना उतारा अपने रसूल पर

وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا

और ईमान वालों पर और उस ने तक़्वे का कलिमा उन से चिपका दिया और वही

اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٢٦﴾ ع ٣

उस के ज़्यादा मुस्तहिक़ और उस के अहल थे। और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं।

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ

यक़ीनन अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा ख्वाब दिखाया था के वाक़ेअ

الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ

में मस्जिदे हराम में इनशाअल्लाह तुम ज़रूर दाखिल होंगे अमन से, अपने सरों को

رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ

मुंडाए हुए और क़स्र कराए हुए बेखौफ हो कर। फिर अल्लाह ने मालूम कर लिया वो जो तुम

مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾

नहीं जानते, फिर उस ने उस के अलावा क़रीबी फ़त्ह दे दी।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ

वही अल्लाह है जिस ने अपना रसूल हिदायत और दीने हक़ दे कर भेजा

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ؕ﴿۲۸﴾

ताके वो उसे तमाम अदयान पर ग़ालिब कर दे। और अल्लाह गवाह काफी है।

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّآءُ

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के भेजे हुए पैग़म्बर हैं। और वो सहाबा जो आप के साथ हैं वो कुफ्फार पर सब

عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ

से ज़्यादा सख्त, आपस में रहमदिल हैं, आप उन को देखोगे रुकूअ सज्दा करते हुए, वो अल्लाह का

فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ؗ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ

फ़ज़्ल और अल्लाह की खुशनूदी तलब करते हैं। उन की अलामत सज्दे के निशान की

مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۛۚ

उन के चेहरों पर है। ये उन की सिफत तौरात में भी है।

وَ مَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۛۚ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ

और उन की सिफ़त इन्जील में भी है उस खेती की तरह जिस ने अपनी सुई निकाली, फिर उस को मज़बूत किया,

فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ

फिर वो सख्त हो गई है, फिर वो अपने तने पर खड़ी हो गई जो खुश करती है किसानों को

لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ताके अल्लाह उन के ज़रिए काफिरों को गुस्सा दिलाए। अल्लाह ने उन से जो उन में से ईमान लाए

وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۲۹﴾

और नेक अमल करते रहे मग़फिरत का और भारी अज्र का वादा किया है।

معانقة ١٥ عند المتأخرين ١٢ — ع ٤

رُكُوْعَاتُهَا ٢ (٤٩) سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٦) اٰيَاتُهَا ١٨

और २ रुकूअ हैं सूरह हुजुरात मदीना में नाज़िल हुई उस में १८ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और उस के रसूल के सामने पेशदस्ती

وَ رَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝۱

न करो और अल्लाह से डरो। यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, इल्म वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ

ऐ ईमान वालो! तुम अपनी आवाज़ें नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आवाज़

صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ

पर बुलन्द मत करो, और उन के सामने ज़ोर से बात न करो तुम में से एक के दूसरे

بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَ اَنْتُمْ

से बात करने की तरह कहीं तुम्हारे आमाल हब्त न हो जाएं, इस हाल में के

لَا تَشْعُرُوْنَ ۝۲ اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ

तुम्हें पता भी न हो। यक़ीनन जो लोग अपनी आवाज़ अल्लाह के रसूल

عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ

के सामने पस्त रखते हैं यही लोग हैं जिन के दिलों के तक़वे का

قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝۳

अल्लाह ने इम्तिहान लिया है। उन के लिए मग़फिरत है और बड़ा अज्र है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ

यक़ीनन वो लोग जो आप को हुजरों के बाहर से पुकारते हैं, उन में से अक्सर

لَا يَعْقِلُوْنَ ۝۴ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ

अक़्ल नहीं रखते। और अगर वो सब्र करते यहाँ तक के आप उन की

اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۵

तरफ निकलते तो ये उन के लिए बेहतर होता। और अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ

ऐ ईमान वालो! अगर तुम्हारे पास कोई फासिक़ कोई खबर ले कर आए

فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا

तो तुम अच्छी तरह तहक़ीक़ कर लो के कहीं नावाक़िफीयत से किसी क़ौम को तुम मुसीबत पहोंचा दो,

عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝۶ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ

फिर अपने किए पर नादिम बनो। और जान लो के तुम में अल्लाह के

اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ

रसूल हैं। अगर वो तुम्हारा केहना मान लें बहोत से उमूर में तो तुम मशक़्क़त में पड़ जाओ,

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ

लेकिन अल्लाह ने तुम्हारी तरफ ईमान को महबूब बना दिया और उस को मुज़य्यन किया

فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ

तुम्हारे दिलों में और तुम्हारे लिए कुफ़्र और नाफरमानी और बदअमली को नापसन्दीदा बना दिया।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۙ﴿۷﴾ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ؕ

यही लोग अल्लाह के फ़ज़्ल और इन्आम से सीधे रास्ते वाले हैं।

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۸﴾ وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ

और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और अगर ईमान वालों में से दो

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ

जमाअतें आपस में लड़ पड़ें तो तुम उन के दरमियान सुल्ह करा दो।

فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ

फिर अगर उन में से एक जमाअत दूसरी पर ज़्यादती करे तो तुम सब क़िताल करो उस से जो ज़्यादती

تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ

कर रही है, यहाँ तक के वो अल्लाह के हुक्म की तरफ वापस लौट आए। फिर अगर वो वापस लौट जाए

فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ؕ

तो तुम उन के दरमियान सुल्ह करा दो इन्साफ से और तुम इन्साफ करो।

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿۹﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ

यक़ीनन अल्लाह इन्साफ करने वालों को पसन्द करते हैं। ईमान वाले तो भाई भाई ही हैं,

فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ

तो तुम अपने भाइयों के दरमियान सुल्ह कर दिया करो। और अल्लाह से डरते रहो ताके तुम पर

تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۰﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ الربع

रहम किया जाए। ऐ ईमान वालो! कोई क़ौम किसी क़ौम से तमस्खुर

مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا

न करे, हो सकता है के वो उन से बेहतर हों और न

نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ

औरतें दूसरी औरतों से, शायद वो उन से बेहतर हों।

وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ

और तुम अपनी ज़ात पर ऐब न लगाओ। और एक दूसरे को बुरे अलक़ाब से न पुकारो।

بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ

ईमान के बाद फ़िस्क़ बुरा नाम है। और जो

لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝۱۱ يٰٓاَيُّهَا

तौबा नहीं करेगा तो ये लोग ज़ालिम हैं। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫

ईमान वालो! बहोत से गुमानों से बचो।

اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ

यक़ीनन बाज़ गुमान गुनाह होते हैं, और तजस्सुस मत करो, और तुम में से एक

بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ

दूसरे की ग़ीबत न करो। क्या तुम में से कोई एक पसन्द करेगा के अपने मुर्दार भाई का

اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ

गोश्त खाए? तो यक़ीनन तुम उस को नापसन्द करोगे। और अल्लाह से डरो।

اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ۝۱۲ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ

यक़ीनन अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला, रहम करने वाला है। ऐ इन्सानो! यक़ीनन हम ने तुम्हें एक

مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ

मर्द और एक औरत से पैदा किया, और हम ने तुम्हें खानदान और क़बीले बनाया ताके तुम एक दूसरे को

لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ

पेहचानो। यक़ीनन तुम में से सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाला अल्लाह के नज़दीक वो है जो तुम में सब से ज़्यादा तक़्वे वाला हो।

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝۱۳ قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ

यक़ीनन अल्लाह इल्म वाला, बाखबर है। देहाती केहते हैं के हम ईमान लाए हैं।

قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا

आप फरमा दीजिए के तुम ईमान नहीं लाए, लेकिन तुम कहो के हम इस्लाम लाए हैं और अब तक

يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوا

ईमान तुम्हारे क़ुलूब में दाख़िल नहीं हुवा। और अगर तुम अल्लाह और उस

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ

के रसूल की इताअत करोगे तो वो तुम्हारे आमाल में ज़रा सी भी कमी नहीं करेगा।

اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ

यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। ईमान वाले तो सिर्फ़ वही हैं जो

اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَ جٰهَدُوْا

अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान लाए हैं, फिर उन्हों ने शक नहीं किया और जिन्हों ने

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ

अपने मालों और जानों से अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया। यही

هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿١٥﴾ قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ

लोग सच्चे हैं। आप फरमा दीजिए क्या तुम अल्लाह को अपना दीन बतला रहे हो?

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ

हालांके अल्लाह ख़ूब जानता है उस को जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है।

وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٦﴾ يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ

और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाले हैं। वो आप पर एहसान जताते हैं

اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ

के वो इस्लाम लाए हैं। आप फरमा दीजिए के एहसान मेरे ऊपर मत जतलाओ अपने इस्लाम का।

بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ

बल्के अल्लाह तुम पर एहसान जतलाता है के उस ने तुम्हें ईमान की हिदायत दी,

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ

अगर तुम सच्चे हो। यक़ीनन अल्लाह आसमानों

غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ

की और ज़मीन की छुपी हुई चीज़ें जानता है। और अल्लाह

بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ ع ٢

देख रहा है उन कामों को जो तुम करते हो।

اٰيَاتُهَا ٤٥ (٥٠) سُوْرَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ (٣٤) رُكُوْعَاتُهَا ٣

और ३ रूकूअ हैं सूरह क़ॉफ मक्का में नाज़िल हुई उस में ४५ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۚ﴿١﴾ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ

क़ॉफ। बुज़ुर्गी वाले कुरआन की क़सम! बल्के ये तअज्जुब करते हैं के उन के पास

مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ

उन्हीं में से डराने वाला आया, फिर काफिरों ने कहा के ये क़ाबिले

عَجِيْبٌ ۚ﴿٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌ

तअज्जुब चीज़ है। के क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे? ये वापस लौटना

بَعِيْدٌ ﴿٣﴾ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ

बहोत दूर है। यक़ीनन हमें मालूम है वो जो ज़मीन उन से कम कर रही है।

وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ﴿٤﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ

और हमारे पास महफूज़ रखने वाला दफ्तर है। बल्के उन्हों ने हक़ को झुठलाया

لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ﴿٥﴾ اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا

जब वो उन के पास आया, बल्के वो खलत मलत मुआमले में हैं। क्या उन्हों ने नज़र नहीं की

اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا

अपने ऊपर आसमान की तरफ कैसा हम ने उसे बनाया और सजाया और जिस में

مِنْ فُرُوْجٍ ﴿٦﴾ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا

कोई फटन नहीं? और ज़मीन हम ने फैलाई और उस में पहाड़

رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ﴿٧﴾

डाल दिए और उस में हम ने तमाम खूबसूरत जोड़े उगाए।

تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿٨﴾ وَنَزَّلْنَا

अल्लाह की तरफ रूजूअ करने वाले हर बन्दे की बसीरत और नसीहत के लिए। और हम ने

مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ

आसमान से बरकत वाला पानी उतारा, फिर उस से बाग़ात उगाए और अनाज

الْحَصِيْدِ ۙ﴿٩﴾ وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ۙ﴿١٠﴾

जो काटा जाता है। और ऊँचे ऊँचे खजूर के दरख्त, जिस के लिए तरतीब से लगे हुए खोशे होते हैं।

رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ؕ كَذٰلِكَ

बन्दों की रोज़ी के तौर पर। और हम ने उस से मुर्दा ज़मीन ज़िन्दा की। इसी तरह

الْخُرُوْجُ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ

क़ब्रों से निकलना होगा। उन से पेहले क़ौमे नूह ने और रस्स वालों ने

وَثَمُوْدُ ۙ﴿١٢﴾ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ۙ﴿١٣﴾ وَّاَصْحٰبُ

और क़ौमे समूद, और क़ौमे आद और फिरऔन और लूत के भाइयों ने, और ऐका

الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾

वालों ने और तुब्बअ की क़ौम ने झुठलाया। सब ने पैग़म्बरों को झुठलाया, फिर मेरी धमकी हक़ीक़त बन गई।

اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ؕ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ

क्या हम पेहली मरतबा पैदा कर के थक गए हैं? (नहीं) बल्के वो अज़ सरे नौ पैदा होने से शक

جَدِيْدٍ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ ع ١٥

में हैं। यक़ीनन हम ने इन्सान को पैदा किया और उस के नफसानी खतरात हम खूब

بِهٖ نَفْسُهٗ ۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿١٦﴾

जानते हैं। और रगे जान से भी ज़्यादा हम उस के क़रीब हैं।

اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ

जब के दाईं और बाईं तरफ से दो बैठे हुए लेने वाले ले रहे

قَعِيْدٌ ﴿١٧﴾ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ

होते हैं। वो कोई बात नहीं निकालता मगर उस के सामने एक निगराँ

عَتِيْدٌ ﴿١٨﴾ وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ

तय्यार होता है। और मौत की सख्ती सच मुच आ गई। (काफिर से कहा जाएगा के) ये

مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿١٩﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ

वो है जिस से तू किनारा किया करता था। और सूर फूंका जाएगा। ये

يَوْمُ الْوَعِيْدِ ﴿٢٠﴾ وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ

अज़ाब का दिन है। और हर शख्स आएगा उस के साथ एक हांकने वाला

وَّ شَهِيْدٌ ﴿٢١﴾ لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا

और एक गवाह होगा। (कहा जाएगा) यक़ीनन तू इस से ग़फलत में था, फिर हम ने

عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ﴿٢٢﴾ وَقَالَ

तुझ से तेरा परदा हटा दिया, फिर तेरी नज़र आज कितनी तेज़ है? और उस का

قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ﴿٢٣﴾ اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ

साथी कहेगा के जो मेरे पास था वो ये हाज़िर है। (हुक्म होगा) हर सरकश काफिर को

كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٢٤﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبِ ﴿٢٥﴾

जहन्नम में डाल दो। जो खैर से बहोत ज़्यादा रोकने वाला, जुल्म करने वाला, शक करने वाला था।

اِلَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِي الْعَذَابِ

जिस ने अल्लाह के साथ दूसरा माबूद बनाया, तो उस को सख्त अज़ाब में

الشَّدِيْدِ ﴿٢٦﴾ قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ

फैंक दो। उस का साथी कहेगा के ऐ हमारे रब! मैं ने इस को सरकश नहीं बनाया,

وَلٰكِنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٢٧﴾ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَيَّ وَقَدْ

लेकिन वो खुद ही दूर वाली गुमराही में था। अल्लाह फरमाएंगे मेरे सामने झगड़ा मत करो, मैं ने

قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ﴿٢٨﴾ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ

तुम्हारी तरफ पेहले वईद भेज दी थी। मेरे यहाँ क़ौल में तबदीली नहीं

وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٢٩﴾ يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ ع ٣

और मैं बन्दों पर ज़रा भी जुल्म नहीं करता। जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे

هَلِ امْتَلَاْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ﴿٣٠﴾ وَاُزْلِفَتِ

क्या तू भर गई? और वो पूछेगी क्या कुछ और भी है? और जन्नत

الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ﴿٣١﴾ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ

मुत्तक़ियों के क़रीब लाई जाएगी, दूर नहीं होगी। (कहा जाएगा) ये वो है जिस का तुम से वादा किया जाता था

لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ﴿٣٢﴾ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ

हर तौबा करने वाले, हिफाज़त करने वाले कि लिए। जो भी रहमान से डरे बग़ैर देखे

وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ﴿٣٣﴾ اِدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ذٰلِكَ يَوْمُ

और तौबा करने वाला दिल ले कर आए। (तो उस से कहा जाएगा) तुम उस में सलामती के साथ दाखिल हो जाओ। ये हमेशा

الْخُلُوْدِ ﴿٣٤﴾ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿٣٥﴾

रेहने का दिन है। उन के लिए उस में वो नेअमतें होंगी जो वो चाहेंगे और हमारे पास और मज़ीद भी है।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ

और कितनी क़ौमें हम ने उन से पेहले हलाक कीं जो क़ूव्वत में उन से बढ़ कर

بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِى الْبِلَادِ ؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٦﴾

थीं, फिर वो शेहरों में नक़बज़नी करने लगे। के कहीं भागने की जगह है?

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى

यक़ीनन इस में अलबत्ता नसीहत है उस शख़्स के लिए जिस के पास दिल हो, या वो कान

السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا

लगाए इस हाल में के वो दिल से मुतवज्जेह भी हो। यक़ीनन हम ने आसमानों और ज़मीन

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖ وَّمَا مَسَّنَا

और उन चीज़ों को जो उन के दरमियान में हैं छे दिन में पैदा किया। और हमें कुछ भी

مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿٣٨﴾ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ

थकावट नहीं पहोंची। इस लिए आप उन की बातों पर सब्र कीजिए, और सूरज के

رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ۚ ﴿٣٩﴾

तुलूअ होने से और सूरज के ग़ुरूब होने से पेहले अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कीजिए।

وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ﴿٤٠﴾ وَاسْتَمِعْ

और रात के वक्त उस की तस्बीह कीजिए और सज्दों (नमाज़) के बाद भी। और सुन

يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٤١﴾ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ

जिस दिन मुनादी क़रीबी जगह से आवाज़ देगा। जिस दिन वो वाकेअ

الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ﴿٤٢﴾ اِنَّا نَحْنُ

में चिंघाड़ सुनेंगे। (कहा जाएगा के) ये क़ब्रों से निकलने का दिन है। यक़ीनन हम ही

نُحْىٖ وَ نُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ

ज़िन्दा करते है और हम ही मारते हैं और हमारी ही तरफ लौटना है। जिस दिन ज़मीन

الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ﴿٤٤﴾

उन से फटेगी इस हाल में के वो दौड़ रहे होंगे। ये क़ब्रों से उठाना हम पर आसान है।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۣ

हम खूब जानते हैं जो वो केह रहे हैं और आप उन पर जब्र करने वाले नहीं हैं।

فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿٤٥﴾

इस लिए आप इस कुरआन के ज़रिए नसीहत कीजिए उस को जो मेरे अज़ाब से डरता है।

اٰيَاتُهَا ٦٠ (٥١) سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ (٦٧) رُكُوْعَاتُهَا ٣

उस में ६० आयतें हैं सूरह ज़ारियात मक्का में नाज़िल हुई और ३ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﴿١﴾ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿٢﴾ فَالْجٰرِيٰتِ

उन हवाओं की क़सम जो बिखेर कर गुबार उड़ाती हैं। फिर उन बादलों की जो बोझ को उठाते हैं। फिर उन कशतियों की जो

يُسْرًا ﴿٣﴾ فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ﴿٤﴾ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ﴿٥﴾

नर्मी से चलती हैं। फिर उन फरिशतों की जो चीज़ें तक़सीम करते हैं। जिस का तुम से वादा किया जा रहा है, यक़ीनन वो

وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٦﴾ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ﴿٧﴾

सच्चा है। और यक़ीनन हिसाब ज़रूर होने वाला है। उस आसमान की क़सम जो रास्तों वाला है।

اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ﴿٨﴾ يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ

(मक्का वालो!) यक़ीनन तुम इखतिलाफ वाली बात में हो। उस से फेरा जाता है उस को जो

اُفِكَ ﴿٩﴾ قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ﴿١٠﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ

फिरता है। अटकल से बातें करने वाले मारे जाएं। वो जो ग़फलत में पड़े हुए,

سَاهُوْنَ ﴿١١﴾ يَسْئَلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٢﴾ يَوْمَ

भूले हुए हैं। वो सवाल करते हैं के हिसाब का दिन कब है? जिस दिन

هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ﴿١٣﴾ ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ۭ هٰذَا

उन को आग में अज़ाब दिया जाएगा। (कहा जाएगा के) तुम अपने फितने को चखो। ये

الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٤﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ

वो है जिस को तुम जल्दी तलब कर रहे थे। यक़ीनन मुत्तक़ी लोग

فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٥﴾ اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ۭ اِنَّهُمْ

जन्नतों में और चशमों में होंगे। ले रहे होंगे वो जो उन को उन के रब ने दिया है। (इस

كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ۱۶ؕ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ

वजह से के) वो इस से पेहले नेकी करने वाले थे। वो रात में कम

مَا يَهْجَعُوْنَ ۱۷ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۱۸

सोते थे। और सहर के वक़्त वो इस्तिग़फार किया करते थे।

وَفِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۱۹ وَفِي الْاَرْضِ

और उन के मालों में हक़ था सवाल करने वाले के लिए भी और ग़ैर साइल फक़ीर के लिए भी। और ज़मीन में

اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ۲۰ۙ وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۲۱

यक़ीन करने वालों के लिए निशानियाँ हैं। और खुद तुम्हारे नुफ़ूस में भी। क्या फिर तुम देखते नहीं?

وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ۲۲ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ

और आसमान में तुम्हारी रोज़ी है और वो भी जिस का तुम से वादा किया जाता है। फिर आसमान और

وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ۲۳ع ع ۱۴ ۲

ज़मीन के रब की क़सम! यक़ीनन ये हक़ है उस के मानिन्द जैसा के तुम बोलते हो।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ۲۴ۘ اِذْ وقف لازم

क्या तुम्हारे पास इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मुअज़्ज़ज़ मेहमानों का क़िस्सा पहोंचा? जब वो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास दाखिल

دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۲۵

हुए तो उन्हों ने कहा अस्सलामु अलैकुम। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमया वअलैकुमुस्सलाम। तुम ऐसे लोग हो जो अजनबी मालूम होते

فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ۲۶ۙ فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ

हो। फिर वो जल्दी से अपने घर वालों की तरफ गए, फिर वो एक मोटा ताज़ा बछड़ा लाए। फिर उस बछड़े को उन के क़रीब किया,

قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۲۷ؗ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया तुम खाते क्यूं नहीं? फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने उन की तरफ से खौफ महसूस किया। उन्हों ने

لَا تَخَفْ ؕ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۲۸ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ

कहा आप खौफ न कीजिए। और उन फरिशतों ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इल्म वाले लड़के की बशारत दी। फिर उन की बीवी

فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ۲۹

सामने आई, फिर माथे पर हाथ मारा और कहा के मैं तो बुढ़िया हो चुकी हूँ, बाँझ हूँ।

قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ۳۰

उन्हों ने कहा के इसी तरह होगा। तेरे रब ने कहा है। यक़ीनन वो हिक्मत वाला, इल्म वाला है।